बस चार दिनों का मेला फिर चला चली खेला लिरिक्स

बस चार दिनों का मेला,
फिर चला चली खेला,
नही कायम जग में डेरा,
प्यारे ना तेरा ना मेरा।bd।

तर्ज – मेरे मन की गंगा।

नो महलों की बाते छोड़ो,
धेला साथ न जाएगा,
मुठ्ठी बांध के आया जग में,
हाथ पसारे जाएगा,
मोती माणिक हेरा,
न सोने का ढेरा,
नही कायम जग में डेरा,
ना तेरा ना मेरा।bd।

ये काया न साथ चलेगी,
जिसपे तू इतराया,
रूप रंग है एक छलावा,
सारी झूठी माया है,
तुझे मद माया ने घेरा,
न राम की माला फेरा,
ना तेरा ना मेरा।bd।

ना सत्संग न राम भजन,
ना तीरथ ना धाम किया,
ना भूखे को रोटी ही दी,
ना कुछ उसका मान किया,
राजेन्द्र हरि का चेरा,
मैं हरि का हरि मेरा,
ना तेरा ना मेरा।bd।

बस चार दिनों का मेला,
फिर चला चली खेला,
नही कायम जग में डेरा,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

गीतकार/गायक – राजेन्द्र प्रसाद सोनी।
8839262340

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com